



डीआरडीओ

समाचार

डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

एल सी ए के नौसेना
प्रारूप का सफल परीक्षण



एल सी ए के नौसेना प्रारूप का सफल परीक्षण

वह एक निर्णायक क्षण था, जब 20 दिसम्बर 2014 को स्वदेश में अभिकल्पित एवं विकसित हल्के लड़ाकू वायुयान (एल सी ए) के नौसेना प्रारूप (एन पी 1) का गोवा में आई एन एस 'हंस' के स्की जम्प सुविधा से युक्त तट आधारित परीक्षण सुविधा से सफल परीक्षण किया गया। इसका अभिकल्पन एवं विकास वायुयान वाहकों के डेक से उड़ान भरने के लिए किया गया है। इसे राष्ट्रीय उड़ान परीक्षण केन्द्र, (नेशनल फ्लाइट टेस्ट सेन्टर), बेंगलूरु के मुख्य परीक्षण पाइलट कमांडर जयदीप



मावलंकर ने उड़ाया। वायुयान निर्दोष ढंग से उड़ा और उड़ान से प्राप्त नतीजे पूर्वानुमान के काफी निकट थे। परीक्षण निदेशक कमांडर जे डी रतूरी की देखरेख तथा सुरक्षा पाइलट कैप्टन शिवनाथ दहिया की उपस्थिति में वायुयान ने उड़ान भरी। ग्रुप कैप्टन अनूप कबडवाल, ग्रुप कैप्टन आर आर त्यागी तथा लेफ्टिनेंट कमांडर विवेक पाण्डेय ने इस उड़ान को सफल बनाने में अपना भरपूर सहयोग दिया। हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, एयरक्राफ्ट रिसर्च तथा डेवलपमेंट सेन्टर के कार्यकारी निदेशक श्री पी एस रॉय के अथक प्रयासों के फलस्वरूप ही इस उड़ान के लिए वायुयान उपलब्ध हो सका।

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव एवं डी आर डी ओ के महानिदेशक, श्री अविनाश चंदर ने नौसेना की एल सी ए टीम को बधाई देते हुए कहा— "आज नौसेना के एल सी ए प्रारूप को भूमि आधारित स्की जम्प सुविधा से उड़ान को सफल होते हुए देखकर हमें विश्वास है कि हमारे स्वदेशी एल सी ए निकट भविष्य में वायुयान वाहकों के डेक से उड़ान भरेंगे। विशिष्ट वैज्ञानिक, डॉ तमिलमणि, महानिदेशक, वैमानिकी डी आर डी ओ ने भी इस एन पी 1 के जटिल एवं सफल उड़ान की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इसका अभिकल्पन एवं विकास वायुयान वाहकों के डेक से उड़ान भरने के लिए किया गया है। इसके लैंडिंग गियर काफी मजबूत तथा स्की जम्प के दबाव को अवशोषित करने में सक्षम हैं। इसे टेक आफ करते समय पाइलट को अपने हाथों से कोई विशेष कार्य नहीं करना पड़ता है, बल्कि उसके दानों हाथ स्वतंत्र होते हैं और वायुयान स्वतः रैम्प से दोड़ते हुए अपने पूर्व निर्धारित पथ पर उड़ान भरना प्रारम्भ कर देता है। एल सी ए के नौसेना प्रारूप की सफल उड़ान से वैज्ञानिकों एवं इंजीनियरों की अथक मेहनत और प्रयास तथा फ्लाइट टेस्ट टीम जिन्होंने इस संपूर्ण उड़ान को आयोजित किया, की क्षमता एवं दक्षता प्रमाणित होती है। यह सुअवसर एल सी ए की नौसेना टीम की वर्षों की अभिकल्पन, फ्लाइट टेस्टों और प्रबंधन कौशल तथा रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की विभिन्न प्रयोगशालाओं के महत्वपूर्ण योगदानों के फलस्वरूप आया है। नौसेना टीम को सैन्य उड़ानयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केन्द्र (सेमीलेक) बेंगलूरु, से उड़ान भरने की अनुमति प्राप्त हुई। गुणवत्ता प्रमाणन एजेंसी सी आर आई से सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। नेवल एयर स्टेशन, आई एन एस 'हंस' ने इस अवसर पर एक दक्ष मेजबान का कार्यभार संभाला। विशिष्ट वैज्ञानिक एवं परियोजना निदेशक, श्री पी एस सुब्रामण्यम ने अपने कुशल निर्देशन से अभिकल्पन टीम को निर्देशित किया और टीम ने एल सी ए की नौसेना प्रारूप के लिए आवश्यकताओं की कसौटी पर खरा उतरने वाली सभी प्रणालियों की आपूर्ति को सुनिश्चित किया। एल सी ए (नौसेना) के परियोजना निदेशक, कमोडोर (सेवानिवृत्त) सी डी बालाजी इस परियोजना के साथ प्रारम्भ से ही जुड़े रहे। ये परियोजना के मुख्य अभिकल्पनकार भी रहे। डॉ अमिताभ सर्राफ ने टीम का नेतृत्व किया। इन्होंने स्वदेशी उड़ान नियंत्रण नियमों का उपयोग किया। ज्ञातव्य हो कि स्की जम्प से फ्लाई-बाई-वायर तकनीक द्वारा उड़ान भरते समय उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं के समाधान इन नियमों द्वारा ही नियंत्रित होते हैं।



डी आर डी ओ समाचार

ISSN: 0971-4405 माघ-फाल्गुन, 1936, फरवरी 2015, खंड 27, अंक 2

प्रकाशन का 27वां वर्ष

मुख्य सम्पादक
सुरेश कुमार जिंदल
सम्पादक
फूलदीप कुमार

डी आर डी ओ समाचार के संवाददाता

श्रीमती बाला वी, वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बैंगलूरु: श्री विकास बी ठाकरे, हवाई वितरण अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए डी आर डी ई), आगरा छावनी: श्री हेमंत कुमार, उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद: डॉ वाई पुरुषोत्तम, वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स), बैंगलूरु: श्री नितिन रॉय, कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बैंगलूरु: डॉ राजेन्द्र सिंह, अग्नि, पर्यावरण एवं विस्फोटक सुरक्षा केंद्र (सीफीस), दिल्ली: सुश्री तृप्ति रानी बोस, सैन्य उड़नयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र (सेमीलेक), बैंगलूरु: श्री एस मुरलीधर संग्राम, वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई: डॉ अतुल ग्रोवर, रक्षा जैव ऊर्जा अनुसंधान संस्थान (डिबेर), पिथौरागढ़: श्री समरहारा प्रसाद, पैट्रो रक्षा उड़नयानिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर), बैंगलूरु: श्री अतुल देव, रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स प्रयोज्यता प्रयोगशाला (डील), देहरादून: डॉ जी श्रीपति रक्षा जैव अभियांत्रिकी तथा चिकित्सा-इलैक्ट्रो प्रयोगशाला (डेबेल), बैंगलूरु: डॉ एम पाल मुरुगन, रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एफ आर एल), मैसूरु: डॉ प्रवीण वत्स, रक्षा शरीरक्रिया एवं सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास), दिल्ली: डॉ विजय प्रकाश, रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली: श्री अशोक कुमार गौतम, रक्षा सामग्री एवं भण्डार अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी एम एस आर डी ई), कानपुर: श्री एम बुची बानू, रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद: श्री ए आर सी मूर्ति, रक्षा इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद: श्री आर के श्रीवास्तव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी आर डी ई), ग्वालियर: डॉ के नागेश्वर राव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद: डॉ जयश्री दास, रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डी आर एल), तेजपुर: श्री रामप्रकाश, रक्षा भू-भाग अनुसंधान प्रयोगशाला (डी टी आर एल), दिल्ली: श्री के एम वीरभद्र, इलैक्ट्रॉनिक्स तथा रडार विकास स्थापना (एल आर डी ई), बैंगलूरु: डॉ सोमेन आचार्य, रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार), लेह: श्री ए एम देवले, उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे: डॉ राजीव विज, नाभिकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली: डॉ एम के पाण्डे, यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आई आर डी ई), देहरादून: श्री अरुण दयाल, पद्धति अध्ययन तथा विप्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली: श्री जयदीप कानूनगो, प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आई टी एम), मसूरी: श्री एच के रथ, एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर), चांदीपुर: श्री अजय शर्मा, लेजर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी केंद्र (लेसटेक), दिल्ली: डॉ लता क्रिस्टी, सूक्ष्मतरंग नलिका अनुसंधान तथा विकास केंद्र (एम टी आर डी सी), बैंगलूरु: श्री एस राधाकृष्णन, नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि: श्री वाई एस आर प्रसाद राव, नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम: श्रीमती कार्तिकी मिश्रा, कार्मिक प्रतिभा प्रबंधन केंद्र (सेपटेम), दिल्ली: डॉ ए के सन्निग्रही, प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर: श्री राजकुमार जैन, भर्ती तथा मूल्यांकन केंद्र (आर ए सी), दिल्ली: डॉ एन वेंकटेश, अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद: श्री एस एस अरोले, अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियर्स) (आर एंड डी ई (इंजी)), पुणे: श्रीमती कामिनी मल्होत्रा, वैज्ञानिक विप्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली: डॉ शंकर दत्त, टोसावस्था भौतिक प्रयोगशाला (एस एस पी एल), दिल्ली: श्री नीरज श्रीवास्तव, चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टी बी आर एल), चंडीगढ़

सहायक सम्पादक
अशोक कुमार

सम्पादकीय सहायक
संजय कटारे
शालिनी छाबड़ा

मुद्रण
एस के गुप्ता

विपणन
आर पी सिंह
हंस कुमार

सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, डेसीडॉक द्वारा डी आर डी ओ की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित
प्रकाशक: डेसीडॉक, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054, दूरभाष: 011-23812252
फैक्स: 011-23819151, ई-मेल: director@desidoc.drdo.in

इस अंक में

- जी एस एल वी के मिशन क्रू कैप्सूल पुनर्प्राप्ति हेतु पैराशूट प्रणाली 04
- 1000 किलोग्राम वर्ग के स्वदेशी विनिर्दिष्ट ग्लाइड बम का सफल परीक्षण 04
- थाम्सन रियूटर्स इण्डिया नवाचार पुरस्कार-2014 05
- राष्ट्रीय संस्थागत पुरस्कार 06
- कार्डियोलोजी एवं इंटरनल मेडिसिन के राष्ट्रीय केन्द्र का उद्घाटन 06
- एविएशन टर्बाइन फ्यूल प्रमाणन 07
- डॉ सतीश रेड्डी कम्प्यूटर सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा सम्मानित 08
- आजीवन सदस्यता 08
- स्थापना दिवस 09
- मानव संसाधन विकास गतिविधियां 12
- हिन्दी कार्यशाला 25
- सतर्कता जागरूकता सप्ताह 26
- कौमी एकता सप्ताह 27
- कार्मिक समाचार 28
- आलेख प्रस्तुति 29
- खेलकूद गतिविधियां 31
- डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण 31



डी आर डी ओ समाचार

जी एस एल वी के मिशन क्रू कैप्सूल पुनर्प्राप्ति हेतु पैराशूट प्रणाली का सफल परीक्षण

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने श्री हरिकोटा से 19 दिसम्बर 2014 को भूस्थिर सैटेलाइट प्रणोदन यान (जी एस एल वी) मार्क-III को सफलता के साथ प्रक्षेपित किया। इसमें मून मिशन क्रू कैप्सूल की पुनर्प्राप्ति हेतु रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन की आगरा स्थित प्रयोगशाला 'हवाई वितरण अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए डी आर डी ई), द्वारा अभिकल्पित एवं विकसित एक उन्नत प्रकार की पैराशूट प्रणाली का उपयोग किया गया था। इस सफल प्रक्षेपण से पैराशूट प्रणाली की दक्षता तथा विश्वसनीयता प्रमाणित हुई। पैराशूट तैनाती प्रणाली ने भली भाँति कार्य करते हुए वांछनीय अवरोहण दर को प्राप्त किया। इसरो ने इस अवसर पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की और ए डी आर डी ई तथा डी आर डी ओ को सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

ए डी आर डी ई, आगरा डी आर डी ओ की देश में अपनी तरह की एकमात्र प्रमुख प्रयोगशाला है। इसे पैराड्रॉप प्रणालियों को अभिकल्पित एवं विकसित करने की विशेषज्ञता प्राप्त है। इस प्रयोगशाला ने भारतीय सेना के लिए विभिन्न प्रयोजनों में उपयोगी अनेक पैराड्रॉप प्रणालियों जैसे कि कॉम्बैट फ्री फाल प्रणाली तथा भारी ड्राप प्रणालियों पी 7 तथा पी 16 को विकसित किया है। युद्ध तथा शान्ति काल में फ्रीफाल प्रणाली काफी उपयोगी होती है। पी 7 और पी 16 प्रणालियों से क्रमशः 7 टन और 16 टन भार के नीतिभारों (पेलोडो) को वायुमार्ग से नियत ठिकानों पर पहुँचाया जा सकता है। इन प्रणालियों की दक्षता असंदिग्ध पाई गई है।



क्रू कैप्सूल पुनर्प्राप्ति पैराशूट प्रणाली।

1000 किलोग्राम वर्ग के स्वदेशी विनिर्दिष्ट ग्लाइड बम का सफल परीक्षण सम्पन्न

रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डी आर डी ओ) द्वारा अभिकल्पित एवं विकसित 1000 किलोग्राम भार वर्ग के स्वदेशी विनिर्दिष्ट ग्लाइड बम का ओडीसा के समुद्री तट से दिनांक 19 दिसम्बर 2014 को सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया। इस बम को भारतीय वायुसेना के एक वायुयान से गिराया गया था। अपने आन-बोर्ड नैविगेशन प्रणाली द्वारा विनिर्दिष्ट यह बम धरती पर गिरने से पूर्व लगभग 100 किलोमीटर की दूरी तय करके अपने पूर्व निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचा और सफलता के साथ बिना किसी त्रुटि के अचूक लक्ष्य भेदन किया। इस बम की उड़ान को चांदीपुर स्थित एकीकृत परीक्षण रेंज परिसर (आई टी आर) में स्थापित रडारों तथा इलैक्ट्रो-ऑप्टिक (विद्युत-प्रकाशीय) प्रणालियों द्वारा निगरानी की गई।

हैदराबाद स्थित अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई) ने नोडल प्रयोगशाला की भूमिका का निर्वाह करते हुए बम के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। बम के लिए आवश्यक संपूर्ण वैमानिकी पैकेज तथा मार्गदर्शन प्रणालियों को आर सी आई द्वारा ही अभिकल्पित एवं विकसित किया गया। डी आर डी ओ की अन्य संस्था जैसे कि बैंगलूरु स्थित रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर), पुणे की आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), एवं चंडीगढ़ की चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टी बी आर एल) ने भी इस बम को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, डॉ अविनाश चन्दर ने इस सफल परीक्षण के लिए टीम के सभी सदस्यों तथा भारतीय वायुसेना की टीम के सदस्यों को, जिन्होंने इस सफलता में अपना बहुमूल्य योगदान दिया, को बधाई देते हुए कहा—“आज देश के पास भारी बमों के अभिकल्पन, विकास एवं प्रक्षेपण की क्षमता है। 100 किलोमीटर दूर स्थित लक्ष्यों पर उच्च परिशुद्धता के साथ गिराया भी जा सकता है।” आर सी आई के निदेशक, डॉ सतीश रेड्डी, विशिष्ट वैज्ञानिक ने इस अवसर पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा —“अब देश विनिर्दिष्ट ग्लाइडेड बमों के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन गया है।”

पुरस्कार

थाम्सन रियूटर्स इण्डिया नवाचार पुरस्कार-2014

भारतीय सेना के लिए उपयोगी विभिन्न यंत्रोपकरणों को विकसित करने वाले देश के प्रमुख संगठन रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डी आर डी ओ) ने सन् 2014 का थाम्सन रियूटर्स इण्डिया पुरस्कार को जीता है। डी आर डी ओ मुख्यालय के इक्स्ट्रामूरल अनुसंधान तथा इंटेलेक्चुअल प्रापर्टी राइट्स निदेशालय के अपर निदेशक श्री अविनाश कुमार ने मुम्बई में दिनांक 12 दिसम्बर 2014 को आयोजित एक भव्य समारोह में डी आर डी ओ के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित होकर इस महत्वपूर्ण पुरस्कार को प्राप्त किया। इस पुरस्कार का निर्णय संगठन द्वारा प्राप्त पेटेंटों, अनुसंधान कार्यों की दक्षता तथा प्रभावशीलता, पेटेंट को लोगों द्वारा कितनी बार रेफर किया गया, नवाचार के प्रभाव तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के आधार पर किया जाता है। डी आर डी ओ को यह पुरस्कार अनुसंधान संस्थानों (रिसर्च इंस्टीट्यूशन्स) की श्रेणी में मिला है। इससे पूर्व सन् 2011 में भी संगठन को यह पुरस्कार “हाईटेक एकेडेमिक तथा गवर्नमेंट इंस्टीट्यूशन” श्रेणी में प्राप्त हुआ था।



श्री अविनाश कुमार (बाएं) डी आर डी ओ की ओर से पुरस्कार लेते हुए।

थल सेना, नौसेना तथा वायुसेना की आवश्यकताओं के अनुरूप विभिन्न यंत्रोपकरणों के अभिकल्पन एवं विकास में संलग्न डी आर डी ओ देश को रक्षा प्रणालियों के मामलों में आत्मनिर्भर बनाने में समर्पित है। यह संगठन प्रक्षेपास्त्र, वैमानिकी, इलैक्ट्रॉनिकी, युद्ध सामग्री, युद्धक वाहन आयुध, इंजीनियरिंग प्रणालियों, उन्नत अंकीय अनुसंधान, नौसेना प्रणालियों, जैवविज्ञान तथा प्रशिक्षण एवं संसूचना प्रणालियों के क्षेत्र में शोध कार्यों में सक्रिय रूप से कार्यरत है। गत वर्षों में संगठन ने उपरोक्त क्षेत्रों में विश्वस्तरीय शोध एवं विकास कार्यों को मूर्त रूप दिया है। डी आर डी ओ के शोध कार्यों में नवाचार एक मुख्य घटक रहा है जिसके फलस्वरूप आज संगठन के पास 1600 से भी अधिक आई पी आर दस्तावेज हैं। इनमें पेटेंट, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क तथा



डी आर डी ओ समाचार

अभिकल्पन सम्मिलित हैं। संगठन के अनुसंधान कार्यों का लाभ सेना के अतिरिक्त देश के आम नागरिकों को भी मिला है। संगठन ने अपने द्वारा विकसित कुछ प्रौद्योगिकियों को आम जनों के हित में समर्पित किया है। इनमें आम लोगों के जीवन में गुणात्मक सुधार हुआ है।

राष्ट्रीय संस्थागत पुरस्कार

भारत सरकार के कृषि मंत्रालय ने लेह स्थित डी आर डी ओ की प्रयोगशाला रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार) को लद्दाख क्षेत्र में मुर्गी पालन विज्ञान (पोल्ट्री साइंस) संबंधी महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्य करने के लिए सन् 2014 का राष्ट्रीय संस्थागत पुरस्कार दिया है।

चंडीगढ़ स्थित केन्द्रीय मुर्गीपालन विकास संगठन में आयोजित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी के भव्य समारोह में राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ वेटेरिनरी एण्ड एनिमल साइंस के उपकुलपति प्रोफसर (डॉ) अजय कुमार गहलोत ने 12 दिसम्बर 2014 को यह पुरस्कार डिहार के विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डॉ आर बी श्रीवास्तव को प्रदान किया।

डिहार को यह पुरस्कार 'नारमोबेरिक हैचरी प्रौद्योगिकी' के क्षेत्र में उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास कार्यों के लिए मिला है। संस्थान द्वारा विकसित ताप नियंत्रित पोल्ट्री रियरिंग प्रणाली का उपयोग लद्दाख के अतिकम तापक्रम में भी कुक्कुटों की संख्या को बढ़ाने के लिए किया जाता है। यह प्रणाली अत्यन्त प्रभावी सिद्ध हुई है। लद्दाख क्षेत्र के किसानों ने इसका उपयोग करके क्षेत्र में कुक्कुट पालन को एक व्यवसाय के रूप में अपनाया है। 'लद्दाख पोल्ट्री फार्मर्स सोसाइटी' जिसे कि वहां के किसानों ने बनाया है, ने लद्दाख क्षेत्र के आर्थिक विकास की गति को त्वरित किया है। संस्थान के प्रयासों ने सेना तथा स्थानीय निवासियों के बीच परस्पर सद्भाव को बढ़ाने में सक्रिय योगदान दिया है तथा सेना को ताजा ब्रॉयलर मुर्गियों की आपूर्ति सुनिश्चित हुई है।

कार्डियोलाजी एवं इंटरनल मेडिसिन के राष्ट्रीय केंद्र का उद्घाटन

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान एवं विकास के सचिव, तथा रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के महानिदेशक, डॉ अविनाश चन्दर ने क्रिगिज गणराज्य में स्थित कार्डियोलाजी एवं इंटरनल मेडिसिन के राष्ट्रीय केंद्र को भारत सरकार द्वारा

अनुदान के रूप में दिए गए 1.2 मिलियन डालर मूल्य के 'कम्प्यूटेड टोमोग्राफी स्कैनर' का, दिनांक 27 अक्टूबर 2014 को उद्घाटन किया। इस उद्घाटन समारोह में स्वास्थ्य मंत्रालय की राज्य सचिव श्रीमती पी यू सुइमवेवा, एन सी सी आई एम की निर्देशिका सुश्री जुमुगुलोवा आइनागुल तथा क्रिगिज-इण्डियन माउंटेन बायोमेडिकल रिसर्च सेन्टर के निदेशक डॉ ए मैरिबीव ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।



एन सी सी आई एम का उद्घाटन करते हुए डॉ अविनाश चन्दर।

इस भव्य समारोह में भारत की ओर से क्रिग गणराज्य के भारतीय राजदूत, श्री जयंत खोब्रागडे के अतिरिक्त डॉ मानस के मंडल, विशिष्ट वैज्ञानिक, महानिदेशक (जीव विज्ञान), डी आर डी ओ, तथा रक्षा शरीरक्रिया एवं सम्बद्ध संस्थान की निदेशिका, डॉ शशी बाला सिंह, विशिष्ट वैज्ञानिक ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम को सफल बनाया। उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में मानव शरीरक्रिया विज्ञान तथा जैव रसायन विज्ञान में दोनों देशों द्वारा संयुक्त रूप से अनुसंधान कार्यों को करने के उद्देश्य से सन् 2009 में क्रिगिज-इण्डियन माउंटेन बायोमेडिकल रिसर्च सेन्टर की स्थापना हुई। नेशनल सेन्टर ऑफ कार्डियोलॉजी एण्ड इंटरनल मेडिसिन (एन सी सी आई एम) गत् अनेक वर्षों से रक्षा शरीरक्रिया एवं सम्बद्ध विज्ञान संस्थान, दिल्ली, को अनुसंधान कार्यों में सहयोग करता रहा है।

एविएशन टर्बाइन फ्यूल प्रमाणन

किसी भी वायुयान को उड़ने की शक्ति एविएशन टर्बाइन फ्यूल (ए टी एफ) से प्राप्त होती है तथा इसकी बहुत बड़ी मात्रा की आवश्यकता होती है। इसकी गुणवत्ता भी वायुयानों की उड़ानों को प्रभावित करती है। देश की अनेक रीफाइनरियों द्वारा ए टी एफ का उत्पादन किया जाता है। सेना के वायुयानों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले ए टी एफ की आवश्यकता पड़ती है। इसका बहुत ही व्यापक मूल्यांकन किया जाता है। डी आर डी ओ की बैंगलूरू स्थित प्रयोगशाला सैन्य उड़नयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र (सेमीलेक) द्वारा ए टी एफ प्रमाणन का कार्य किया जाता है।

सेमीलेक के मुख्य कार्यकारी (उड़नयोग्यता) ने मेसर्स एच एम ई एल को ए टी एफ उत्पादन प्रारंभ करने के लिए आवश्यक 'टाइप एप्रूवल सर्टीफिकेट' प्रदान किया। आर सी एम ए के क्षेत्रीय निदेशक डॉ शिरीश एस काले ने 13 अक्टूबर 2014 को एच एम ई एल के उप-प्रधान (रिफाइनरी) को भटिंडा में तकनीकी प्रमाण पत्र दिया। कच्चे तेल के विभिन्न व्यापक परीक्षणों द्वारा जांच, मूल्यांकन, ए टी एफ की भौतिक-रासायनिक गुणों के मान्य प्राचलों के अध्ययन,



श्री एस जयपाल (बाएं) मेसर्स एच एम ई एल लिमिटेड के उप-प्रधान को टाइप एप्रूवल सर्टीफिकेट प्रदा करते हुए।

कार्यनिष्पादन दक्षता, ए टी एफ के साथ विभिन्न एडिटिवों की स्वीकार्यता तथा ए टी एफ में एडिटिवों की डोपिंग से पूर्व एवं पश्चात् उसके सेवा गुणों पर प्रभावों की पूरी जांच पड़ताल के पश्चात् ही यह प्रमाण पत्र जारी किया जाता है। इन सभी परीक्षणों पर खरा उतरने तथा वायुसेना से प्राप्त फीडबैक का संज्ञान लेने के बाद ही आर सी एम ए द्वारा मेसर्स एच एम ई एल को टाइप एप्रूवल सर्टीफिकेट दिया गया।

सम्मान

डॉ सतीश रेड्डी कम्प्यूटर सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा सम्मानित

डॉ जी सतीश रेड्डी, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद को कम्प्यूटर सोसाइटी ऑफ इंडिया ने, अपने वार्षिक अधिवेशन तथा स्वर्ण जयंती समारोह के दौरान हैदराबाद में 13 दिसम्बर 2014 को मानद फेलोशिप देकर सम्मानित किया। तेलंगाना सरकार में सूचना प्रौद्योगिकी तथा पंचायती राज मंत्री श्री के टी रामाराव ने डॉ रेड्डी को यह सम्मान प्रदान किया।



मानद फेलोशिप प्राप्त करते हुए डॉ रेड्डी (बाएं)।

डॉ रेड्डी को यह सम्मान कम्प्यूटर विकास, सूचना प्रौद्योगिकी तथा डी

आर डी ओ द्वारा प्रक्षेपास्त्रों विशेषकर अग्नि मिसाइलों के लिए आन बोर्ड मिशन कम्प्यूटरों, नैवीगेशन कम्प्यूटरों तथा सिस्टम आन चिप' पर आधारित अतिसूक्ष्म उच्च क्षमताशील कम्प्यूटरों के विकास में उनके बहुमूल्य एवं उत्कृष्ट योगदानों के लिए मिला है। डॉ रेड्डी ने न केवल अत्यंत महत्वपूर्ण परियोजनाओं तथा स्वदेशी प्रक्षेपास्त्रों हेतु हाईस्पीड एवियानिक्स, को प्रारम्भ किया बल्कि उनके लिए 'रियल टाइम मिशन सॉफ्टवेयर' को विकसित करने में भी अपनी नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया।

कम्प्यूटर सोसाइटी ऑफ इंडिया की स्थापना 1965 में हुई। यह देश की सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कार्य करने वाले प्रौद्योगिकविदों की सबसे बड़ी तथा सबसे अच्छी तरह से प्रबंधित संस्था है। इस सोसाइटी का मुख्य उद्देश्य देश में कम्प्यूटर विज्ञान तथा सूचना प्रौद्योगिकी को विकसित करना है। इसमें सैद्धान्तिक और प्रयोग-उपयोग तथा शैक्षिक सभी पहलुओं पर ध्यान दिया जाता है। इस सोसाइटी के 73 केन्द्र (चैप्टर) तथा एक लाख से अधिक सदस्य हैं। विद्यार्थी, सॉफ्टवेयर इंजीनियर, वैज्ञानिक तथा अकादमीशियन इसके सदस्य हैं।

डॉ रेड्डी के साथ ही देश विदेश की दस अन्य प्रसिद्ध हस्तियों ने भी इस सम्मान मानद फेलोशिप को प्राप्त किया। श्री चन्द्र बाबू नायडू, श्री एस एम कृष्णा, श्री रतन टाटा, प्रोफेसर यशपाल तथा प्रोफेसर एम जी के मेनन जैसे ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक भी इस सम्मान को प्राप्त कर चुके हैं।

आजीवन सदस्यता

भारतीय धातु संस्थान (आई आई एम), कोलकत्ता, धातु विज्ञान को समर्पित एक विश्व प्रसिद्ध संगठन है। इस संस्थान ने डी आर डी ओ मुख्यालय में 'क्लसटर कोआर्डिनेशन' (समूह समन्वय) के निदेशक, डॉ अरविन्द भारती को पुणे में अपने 52वें राष्ट्रीय धातु दिवस समारोह के शुभअवसर पर "लाइफ फेलोशिप" देकर

सम्मानित किया। आई आई एम धातुकी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास एवं प्रगति को समर्पित देश की प्रमुख संस्था (संगठन) है। यह धातुकी के क्षेत्र में अनुसंधान कार्यों को भी प्रोत्साहित करता है। भारतीय रेयर अर्थ लिमिटेड के चेयरमैन तथा प्रबंध निदेशक एवं आई आई एम के प्रधान (प्रेसिडेंट) डॉ आर एन पात्रा ने अपने कर कमलों से डा अरविन्द को यह फेलोशिप प्रदान की।



लाइफ फेलोशिप स्वीकार करते हुए डॉ अरविन्द भारती (बाएं)।

स्थापना दिवस समारोह

रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डी आर एल), तेजपुर

तेजपुर स्थित, रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डी आर एल) ने दिनांक 21 नवम्बर 2014 को बड़ी धूमधाम के साथ अपना 52वाँ स्थापना दिवस मनाया। प्रयोगशाला के निदेशक, डॉ विजय वीर ने सभागार में उपस्थित समारोह के मुख्य अतिथि प्रोफेसर (डॉ) एन सी भट्टाचार्य, तेजपुर मेडिकल कालेज के प्रिंसिपल, तथा अन्य गणमान्य अतिथियों, संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत करते हुए संस्थान की मुख्य उपलब्धियों को रेखांकित किया तथा स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिकों व अधिकारियों तथा कर्मचारियों को उनके योगदानों के लिए प्रयोगशाला स्तरीय डी आर डी ओ पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त दो सर्वश्रेष्ठ प्रकाशित शोधपत्रों के लेखकों को 'एस एन दुबे प्रकाशन' पुरस्कार भी दिया गया। स्थापना दिवस समारोह को यादगार बनाने के उद्देश्य से एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया जिसमें प्रयोगशाला के कलाकारों ने अपनी कला का परिचय दिया। रंगारंग कार्यक्रम में भाग लेने वाले कलाकारों तथा विभिन्न खेल स्पर्धाओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।



स्वागत भाषण देते हुए प्रयोगशाला के निदेशक डॉ विजय वीर।

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल) हैदराबाद

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद ने 21 अक्टूबर 2014 को अपना 51वाँ स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया। भर्ती एवं मूल्यांकन केंद्र (आर ए सी), दिल्ली के चेयरमैन प्रोफेसर डी एन रेड्डी इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। स्थापना दिवस आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ ए चक्रवर्ती ने सभागार में उपस्थित सम्मानित अतिथियों, संस्थान के वैज्ञानिकों कर्मचारियों, अधिकारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों का गर्मजोशी से स्वागत किया। प्रयोगशाला के निदेशक डॉ अमोल ए गोखले, डी एस, ने इस अवसर पर अपने संबोधन में प्रयोगशाला की उपलब्धियों तथा भविष्य की योजनाओं पर अपना दृष्टिकोण सबके सामने रखा। डॉ गोखले ने

संस्थान के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों की उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया और उनकी मुक्त कंठ से भूरी-भूरी प्रशंसा की। उन्होंने विभिन्न परियोजनाओं के कार्यान्वयन हेतु व्यवस्थित विधि अपनाने पर विशेष बल दिया ताकि मार्ग में आने वाली अनिश्चितताओं को कम किया जा सके। डॉ गोखले ने अपने संबोधन को यह कहते हुए समाप्त किया कि अपने कर्मचारियों और

अधिकारियों में परस्पर सहयोग की भावना से कार्य करने के लिए प्रेरित करके कोई भी प्रयोगशाला अपनी उपलब्धियों को उम्मीद से अधिक बढ़ा सकती है। यदि वे स्व-प्रेरित हों तो कहना ही क्या।

प्रोफेसर डी एन रेड्डी ने संबोधन में प्रयोगशाला की पूर्व एवं वर्तमान उपलब्धियों की काफी प्रशंसा की। प्रोफेसर रेड्डी कुछ वर्ष पूर्व हैदराबाद की जे एन तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति थे। उन दिनों को याद करते हुए उन्होंने बताया कि उन दिनों भी वे डी एम आर एल की वैज्ञानिक गतिविधियों और क्रियाकलापों से जुड़े हुए थे। प्रोफेसर रेड्डी ने संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा प्रकाशित उच्च कोटि के विभिन्न प्रकाशनों की विशेष रूप से चर्चा की।

प्रयोगशाला को समर्पित 20 वर्षों की सेवा देने वाले कर्मचारियों को डॉ गोखले ने स्मृति चिन्ह तथा प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। संस्थान के विशिष्ट वैज्ञानिक, डॉ ए के गोगिया, सह निदेशक डॉ ए के मुखोपाध्याय तथा वैज्ञानिक जी, डॉ ए आनंद ने संस्थान के कर्मचारियों/अधिकारियों को डी आर डी ओ के प्रयोगशाला स्तरीय पुरस्कार, नकद पुरस्कार तथा विभिन्न खेल स्पर्धाओं के विजेताओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने वाले कलाकारों को पुरस्कृत करके सम्मानित किया। स्थापना दिवस आयोजन समिति के सह अध्यक्ष श्री ए सत्यनारायण ने सभागार में उपस्थित सभी गणमान्य विभूतियों का आभार एवं धन्यवाद व्यक्त करते हुए समारोह का समापन किया।



स्थापना दिवस के दौरान मंचासीन विभूतिगण।

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बैंगलूरु

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बैंगलूरु ने 7 नवम्बर 2014 को अपना 55वाँ स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम के साथ मनाया। डॉ तमिलमणि, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक (वैमानिकी) इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। श्रीमती संतोशम तमिलमणि एवं श्रीमती लक्ष्मी रामनारायणन इस समारोह में विशेष आमंत्रित अतिथि तथा रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर), बैंगलूरु की उत्कृष्ट वैज्ञानिक, सुश्री जे मंजुला की उपस्थिति गरिमामयी रही। संस्थान के निदेशक डॉ सी पी रामनारायणन ने अपने स्वागत संबोधन में प्रयोगशाला की गत एक वर्ष की प्रमुख उपलब्धियों पर विस्तार से चर्चा करते हुए यह कहा कि सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सामग्री प्रबंधन एवं प्रशासनिक कार्यों का अनुभव अवश्य लेना चाहिए।

समारोह के मुख्य अतिथि, डॉ के तमिलमणि ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में गैस टरबाइन इंजन के स्वदेशीकरण की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि इसके लिए विदेशी निर्भरता देश के लिए घातक है। अपनी बात को आगे विस्तार देते हुए कहा कि गैस टरबाइन इंजनों के परीक्षण और जांच पड़ताल के लिए देश में उन्नत परीक्षण सुविधाओं को विकसित एवं स्थापित करने के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि औद्योगिक घरानों से मजबूत संबंध बने ताकि देश में उपलब्ध संस्थानों का सही ढंग से व्यापक उपयोग हो सके। इस शुभ अवसर पर जी टी आर ई द्वारा निर्मित छोटे टरबो फैन इंजन का 'मानिक' के नाम से नामकरण किया गया। प्रयोगशाला के प्रतिभावान अधिकारियों एवं कर्मचारियों को डी आर डी ओ की प्रयोगशाला स्तरीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।



(बाएं से दाएं) श्री एन एस जोनाथन जोशुआ, श्रीमती लक्ष्मी रामनारायणन, डॉ सी पी रामनारायणन, डॉ के तमिलमणि, श्रीमती संतोशम तमिलमणि, सुश्री जे मंजुला तथा श्री रमेश मूर्ति, जी टी आर ई के स्थापना दिवस समारोह का आनंद लेते हुए।

मानव संसाधन विकास गतिविधियां

सूक्ष्मतरंग नलिका अनुसंधान तथा विकास केन्द्र (एम टी आर डी सी), बैंगलूरु

सूक्ष्मतरंग नलिका अनुसंधान तथा विकास केन्द्र (एम टी आर डी सी), बैंगलूरु ने 30 अक्टूबर 2014 को अपना 30वाँ स्थापना दिवस मनाया। अति विशिष्ट सेवा मेडल तथा विशिष्ट सेवा मेडल से अलंकृत उप नौसेनाध्यक्ष, के आर नायर इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। भारत इलैक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बेल) के निदेशक श्री एम एस हांडा इस समारोह में विशेष आमंत्रित अतिथि थे।

डॉ ललित कुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं संस्थान के निदेशक ने सभागार में उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने संस्थान की गत एक वर्ष की उपलब्धियों, विशेषकर 'मल्टीबीम क्लिस्ट्रान प्रौद्योगिकी' क्षेत्र में मिली ब्रेक थ्रू की व्यापक विस्तार से चर्चा किया। डी आर डी ओ में उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक



अनुसंधान पत्रों के संकलन के विमोचन का दृश्य।

(एम ई डी, सी ओ एस तथा सी एस), डॉ के डी नायक ने अपने आशीर्वचनों से केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं अन्य कर्मचारियों का उत्साह बढ़ाया। इस अवसर पर डॉ नायक ने एम टी आर डी सी द्वारा विकसित उत्पादों की जानकारियों पर लिखित उत्पाद ब्रोसर का अनावरण भी किया।

मुख्य अतिथि उप नौसेनाध्यक्ष नायर ने अपने संबोधन में एम टी आर डी सी की विभिन्न उपलब्धियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और डी आर डी ओ के उत्पादों के स्वदेशीकरण पर विशेष बल दिया। एडमिरल नायर का यह विशेष आग्रह था कि देश को रक्षा उत्पादों के मामलों में विदेशों पर निर्भरता बिल्कुल भी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने एम टी आर डी सी एवं भारत इलैक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड के बीच परस्पर सहयोग की भी मुक्त कंठ से सराहना की। इस अवसर पर बेल के निदेशक श्री एम एस हांडा ने अनुसंधान पत्रों की पुस्तिका को भी विमोचन किया।

प्रयोगशाला द्वारा स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित विभिन्न खेल स्पर्धाओं के विजेताओं को पुरस्कृत कर डॉ नायक ने उनका उत्साह वर्धन किया। डॉ नायक ने संस्थान के प्रतिभावान अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रयोगशाला स्तरीय विभिन्न डी आर डी ओ पुरस्कारों से पुरस्कृत किया। इस अवसर पर एम टी आर डी सी में कार्यरत कर्मियों के प्रतिभावान बच्चों को भी पुरस्कृत किया गया। संस्थान के स्थापना दिवस समारोह में एक रंगारंग कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया था जिसमें केंद्र के कर्मचारियों और उनके बच्चों ने अत्यंत रोचक एवं मनोरंजक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। डॉ सुधीर कामथ, वैज्ञानिक 'जी' के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह का समापन हुआ।

मुख्य अतिथि उप नौसेनाध्यक्ष नायर ने अपने संबोधन में एम टी आर डी सी की विभिन्न उपलब्धियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और डी आर डी ओ के उत्पादों के स्वदेशीकरण पर

मुख्य अतिथि उप नौसेनाध्यक्ष नायर ने अपने संबोधन में एम टी आर डी सी की विभिन्न उपलब्धियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और डी आर डी ओ के उत्पादों के स्वदेशीकरण पर

मुख्य अतिथि उप नौसेनाध्यक्ष नायर ने अपने संबोधन में एम टी आर डी सी की विभिन्न उपलब्धियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और डी आर डी ओ के उत्पादों के स्वदेशीकरण पर

मुख्य अतिथि उप नौसेनाध्यक्ष नायर ने अपने संबोधन में एम टी आर डी सी की विभिन्न उपलब्धियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और डी आर डी ओ के उत्पादों के स्वदेशीकरण पर

मुख्य अतिथि उप नौसेनाध्यक्ष नायर ने अपने संबोधन में एम टी आर डी सी की विभिन्न उपलब्धियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और डी आर डी ओ के उत्पादों के स्वदेशीकरण पर

वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली

वैज्ञानिक विश्लेषण समूह, दिल्ली द्वारा 21 नवम्बर 2014 को अपना 51वाँ स्थापना दिवस मनाया गया। स्थापना दिवस समारोह का उद्घाटन डी आर डी ओ में विशिष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक (एम ई डी, सी ओ एस तथा सी एस) डॉ के डी नायक के कर कमलों द्वारा किया गया। राष्ट्रीय तकनीकी अनुसंधान संगठन (एन टी आर ओ) के अध्यक्ष श्री ए जी आप्टे इस समारोह में मुख्य अतिथि थे। इस समारोह में डी आर डी ओ मुख्यालय से अनेक मुख्य नियंत्रक के अतिरिक्त विभिन्न प्रयोगशालाओं के निदेशक, विभिन्न निदेशालयों के निदेशक तथा सी पी सी के कई सदस्यों ने भाग लिया। प्रयोगशाला के पूर्व कर्मियों ने भी इस समारोह में अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। प्रयोगशाला के प्रतिभाशाली कर्मचारियों एवं अधिकारियों को डी आर डी ओ के प्रयोगशाला स्तरीय पुरस्कारों से तथा नकद पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के समापन के अवसर पर संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा एक रंगारंग कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया जिसे लोगों की सराहना मिली।



स्थापना दिवस के शुभारम्भ का दृश्य।

नई आधार प्रयोगशाला स्थापित

रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान, लेह, ने चंडीगढ़ में एक आधार प्रयोगशाला की स्थापना की है। डी आर डी ओ मुख्यालय के जैव विज्ञान के महानिदेशक एवं उत्कृष्ट वैज्ञानिक, डॉ मानस के मंडल ने इस नव स्थापित प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। यह प्रयोगशाला नैनोसाइंस, पशु एवं पादप जैवप्रौद्योगिकी, जैव सुरक्षा, अपरम्परागत ऊर्जा संवर्द्धन (जर्मप्लाज्म) संरक्षण तथा संज्ञानात्मक (काग्निटिव) विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य करेगी।

अपने उद्घाटन व्याख्यान में डॉ मानस के मंडल ने बताया कि युवा वैज्ञानिकों तथा जैव विज्ञान क्लस्टर प्रयोगशालाओं के लिए यह डी आर डी ओ की एकमात्र एवं प्रथम केंद्र के रूप में अपना स्थान बनाएगी। यह मानव कार्य दक्षता में वृद्धि हेतु शोध के अनेक क्षेत्रों में कार्य करने वाले वैज्ञानिक मिलजुल कर एक साथ परस्पर सहयोग के साथ अनुसंधान कार्य करेंगे। आपने लद्दाख क्षेत्र में कार्यरत सैनिकों तथा समाज के अन्य स्थानीय निवासियों के जीवन तथा आर्थिक-सामाजिक विकास हेतु डिहार द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि सैनिकों तथा आम नागरिकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए न केवल वैज्ञानिक सोच जरूरी होती है, बल्कि उस सोच एवं दृष्टिकोण को वास्तविकता के धरातल पर उतारने के लिए योग्यता एवं क्षमता की भी जरूरत पड़ती है।

नव निर्मित आधार प्रयोगशाला की भावी वैज्ञानिक अनुसंधान गतिविधियों को रेखांकित करते हुए डिहार के उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डॉ आर बी श्रीवास्तव ने बताया कि इस केन्द्र के बनने से

अनुसंधान कार्यों को वर्ष भर लगातार चलाया जा सकेगा क्योंकि वर्ष में काफी समय तक लेह, लद्दाख क्षेत्र में अत्यधिक ठंड के कारण सैनिकों एवं वैज्ञानिकों का आवागमन प्रभावित हो जाता है। यह केंद्र इस क्षेत्र की अन्य प्रयोगशालाओं में कार्यरत वैज्ञानिकों के मध्य सम्पर्क सूत्र जोड़ने में एक सेतु का कार्य करेगा। क्षेत्र की आकादमिक संस्थाएं भी इस केंद्र से लाभान्वित होंगी।



डॉ मानस कुमार मंडल (दाएं) तथा डॉ आर बी श्रीवास्तव उद्घाटन करते हुए।

मानव संसाधन विकास गतिविधियां सम्मेलन / सेमिनार / विचार-गोष्ठी / प्रशिक्षण पाठ्यक्रम / बैठक

सैन्य नेटवर्किंग हेतु प्रौद्योगिकियाँ

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बेंगलूरु में सत्त शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत 13-17 अक्टूबर तक "सैन्य नेटवर्किंग हेतु प्रौद्योगिकियाँ-भविष्य की दिशाएं" विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कुल 27 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इनमें से 2 प्रतिभागी ब्रह्मोस एयरोस्पेस प्राइवेट लिमिटेड तथा एक प्रतिभागी सिस्टम प्लानिंग एण्ड इम्प्लीमेंटेशन (स्पिक) दिल्ली से भी थे।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रारम्भ में कार्यक्रम संयोजक ने अपने संबोधन में कोर्स की आवश्यकता तथा महत्व के बारे में प्रकाश डाला। इसके पश्चात् नेटवर्किंग के विभिन्न पहलुओं जैसे कि अहितकारी नेटवर्किंग, रूकावट सहय नेटवर्किंग, साफ्टवेयर परिभाषित नेटवर्किंग, एड-हॉक नेटवर्किंग, नेटवर्क डायनामिक्स, नेटवर्क प्रबंधन तथा नेटवर्क क्यू ओ एस पर विशेषज्ञों ने अपना-अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस कोर्स में सेना तथा आम नागरिकों के लिए नेटवर्किंग खासतौर से सैन्य उपयोगी व्यूह रचने की कुशलता विकसित करने में नेटवर्किंग के उपयोग से सम्बंधित विषयों पर भी व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। इसमें नेटवर्क प्रबंधन तथा नेटवर्क सिमुलेशन हेतु उपयोगी यंत्रों का भी प्रदर्शन किया गया। कुछ वक्ताओं ने अपनी प्रस्तुतियों को अत्यंत रोचक ढंग से वीडियो के माध्यम से लाभार्थियों के समक्ष रखा। इस शिक्षा कार्यक्रम में दो वक्ता उद्योग जगत से तथा एक वक्ता शिक्षाविद् थे। कार्यक्रम में भाग लेने वालों के लिए यह काफी लाभकारी था, जिसे लोगों की काफी सराहना मिली।

नेटवर्क सुरक्षा

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर) बेंगलूरु, द्वारा डी आर डी ओ के सत्त शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक 27 से 31 अक्टूबर 2014 तक 'नेटवर्क सुरक्षा' विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कुल 17 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें दो प्रतिभागी वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बेंगलूरु तथा एक प्रतिभागी रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर के थे। इस कार्यक्रम का प्रारम्भ केंद्र के वैज्ञानिक एफ श्री ए वी सहदेवन के संबोधन से हुआ। आपने अपने संबोधन में कोर्स के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। आपने बताया कि इसका उद्देश्य डी आर डी ओ के वैज्ञानिकों में नेटवर्किंग सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं का परिज्ञान विकसित कराना है ताकि वे नेटवर्किंग के सुरक्षात्मक तथ्यों से भली भाँति परिचित हो सकें।

इस कार्यक्रम के दौरान नेटवर्किंग सुरक्षा के विशेषज्ञ वक्ताओं 30 के द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। इसमें नेटवर्क को सुरक्षित रखने हेतु भरोसेमंद कम्प्यूटिंग, हमलों से नेटवर्क की सुरक्षा, तारयुक्त एवं बेतार नेटवर्क के लिए सुरक्षित मार्ग तथा नेटवर्क से प्रसारित सूचनाओं के आथेन्टिकेशन तथा सिग्नेचर इत्यादि विषयों पर अति उपयोगी एवं महत्वपूर्ण प्रस्तुतियाँ थी। इस कोर्स में प्रतिभागियों ने वक्ताओं के साथ काफी विचार विमर्श किया। इसे सभी प्रतिभागियों ने अपने लिए लाभदायक माना।

एल सी ए के उडनयोग्यता प्रमाणन

सैन्य उडनयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केन्द्र (सेमीलेक), बेंगलूरु के वैज्ञानिक एफ श्री एम पीटर अरुण ने दक्षिण कोरिया गणराज्य के राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय तथा भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के बीच उडनयोग्यता प्रमाणीकरण सहयोग से संबंधित अनुसंधान एवं विकास हेतु समझौता ज्ञापन पर आयोजित सम्मेलन में हल्के लड़ाकू वायुयान तेजस के 'प्रारंभिक आपरेशन क्लीयरेंस' हेतु उडनयोग्यता प्रमाणीकरण विषय पर आमंत्रित व्याख्यान दिया। इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन दक्षिण कोरिया गणराज्य की सैन्य उडनयोग्यता प्रमाणीकरण प्राधीकरण द्वारा सियोल में किया गया था। यह प्राधीकरण रक्षा अधिग्रहण कार्यक्रम प्रशासन (डिफेन्स एक्वूजिशन प्रोग्राम एडमिनिस्ट्रेशन) के प्लानिंग डिविजन के अधीन कार्य करती है।



व्याख्यान देते हुए श्री पीटर अरुण।

इस सम्मेलन में अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, इटली, चेकोसलोवाकिया, आस्ट्रेलिया, इराक, पेरू, ब्राजील, कोरिया तथा भारत के प्रतिभागियों ने भाग लिया था। इस कान्फ्रेंस में प्रतिभागियों ने उडनयोग्यता के प्रमाणीकरण से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर एक दूसरे के साथ बाँटे। यह एक अत्यंत उपयोगी एवं सफल कान्फ्रेंस थी।

ऐरो सामग्री, अवयवों एवं प्रणाली के फेल विश्लेषण पर राष्ट्रीय

सैन्य उड़नयोग्यता एवं प्रमाणन केन्द्र, क्षेत्रीय सैन्य उड़नयोग्यता केन्द्र (एफ एवं एफ – एफ ओ एल), बेंगलूरु तथा हिन्दुस्तान ऐरोनोटिक्स लिमिटेड (एफ एवं एफ), बेंगलूरु ने फेल विश्लेषण समिति (एस एफ ए), बेंगलूरु चैप्टर की ओर से 10 अक्टूबर 2014 को ऐरो सामग्री, अवयवों एवं प्रणाली के फेल विश्लेषण (एफ ए ए एम सी एस-2014) नामक विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

डॉ सी पी राम नारायणन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, जी टी आर ई, उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे। श्री जी गौड़ा, अध्यक्ष, एस एफ ए, बेंगलूरु चैप्टर ने संगोष्ठी के उद्देश्य को बताया। प्रोफेसर विक्रम



संगोष्ठी के सत्र के दौरान मंचासीन विभूतिगण।

जयराम, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलूरु ने मुख्य सम्बोधन दिया। श्री डी के वेंकटेश, महाप्रबंधक, हिन्दुस्तान ऐरोनोटिक्स लिमिटेड (एफ एवं एफ) ने ऐरो सामग्री, अवयवों एवं प्रणाली के फेल विश्लेषण पर चर्चा की। श्री पी जयपाल, अध्यक्ष, एस एफ ए, बेंगलूरु चैप्टर तथा मुख्य कार्यकारी (ए), सेमीलेक ने एस एफ ए का कार्य कर रहे लोगों तथा अभियंताओं, प्रौद्योगिकिविदों, वैज्ञानिकों तथा अन्य लोगों द्वारा इसके प्रभावी उपयोग की प्रशंसा की।

प्रतिष्ठित विशेषज्ञों द्वारा छह आयोजित व्याख्यान दिए गए, जिनमें संगोष्ठी के विषय से संबंधित सभी विषय जैसे अभिकल्पन, मिरित फेल, दुर्घटना की छानबीन, एन डी टी तकनीकें इत्यादि को शामिल किया गया। श्री एम एस वेल्परी, सहायक महाप्रबंधक (उत्पादन), हिन्दुस्तान ऐरोनोटिक्स लिमिटेड (एफ एवं एफ) तथा संयोजक, (एफ ए ए एम सी एस-2014) तथा सचिव एस एफ ए, बेंगलूरु चैप्टर ने सभी का स्वागत किया। डॉ शिरीष एस काले, संयोजक, (एफ ए ए एम सी एस-2014) तथा संयुक्त सचिव एस एफ ए, बेंगलूरु चैप्टर तथा क्षेत्रीय निदेशक, आर सी एम ए (एफ एवं एफ-एफ ओ एल) ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

ए एफ वी के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियों पर नोवल एप्रोच पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम

संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई द्वारा 10 अक्टूबर 2014 को ए एफ वी के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियों पर नोवल एप्रोच पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। पाठ्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को ए एफ वी की भविष्यत् प्रौद्योगिकियों की जानकारी देना था। श्री के लोगानाथन, वैज्ञानिक जी ने इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। सी वी आर डी ई, सैन्य प्रशिक्षण संस्थान (मिलिट), पुणे तथा डी आर डी ओ की सहायक प्रयोगशालाओं से 26 प्रतिभागियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया।

डी आर डी ओ समाचार

विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान दिए गए, जिनमें फायरवायर, मोबिलिटी, सरवाइवेबिलिटी, भविष्यत् ए एफ वी के लिए एफ वी स्थापना एवं प्रणाली एकीकरण के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया। सी वी आर डी ई, सेना, मिलिट, सैन्य इलैक्ट्रॉनिक्स तथा मिकेनिकल इंजीनियरिंग महाविद्यालय, हैदराबाद, सी एम ई, एम ए जी 6, अवाड़ी, अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियर्स) (आर एंड डी ई (इंजी)), पुणे; बी ई एल, डी एल, जोधपुर; डी एम आर एल, हैदराबाद; यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आई आर डी ई), देहरादून; आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे के संकाय सदस्यों ने व्याख्यान दिए।

पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में, प्रतिभागियों को सी वी आर डी ई, की अनुरूपक सुविधा में ले जाया गया। पाठ्यक्रम से पहले तथा पाठ्यक्रम के बाद प्रतिभागियों के ज्ञान को जांचने के लिए एक परीक्षा का भी आयोजन किया गया। डॉ पी शिवकुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, सी वी आर डी ई, ने समापन सम्बोधन दिया।

अंतर्राज्यीय सिपाही सहायता प्रौद्योगिकियों

रक्षा जैव अभियांत्रिकी तथा चिकित्सा-इलैक्ट्रो प्रयोगशाला (डेबेल), बेंगलूरु द्वारा 10-14 नवम्बर 2014 के दौरान अंतर्राज्यीय सिपाही सहायता प्रौद्योगिकियों पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ वी सी पदकी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, डेबेल ने इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया तथा अंतर्राज्यीय भौतिकी एवं मनोविज्ञान पर एक संक्षिप्त मुख्य सम्बोधन भी दिया। पाठ्यक्रम के प्रतिभागी डी आर डी ओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं तथा भारतीय नौसेना के मध्यम स्तरीय अधिकारी थे। पांच दिन के इस पाठ्यक्रम में सोलह सत्र आयोजित किए गए, जिसमें अंतर्राज्यीय प्रणाली, जैसे कि पनडुब्बी प्रणालियां, अनुरूपण अध्ययन, अंतर्राज्यीय प्रणालियों का गुणवत्ता नियंत्रण, चिकित्सा आपातकाल तथा टेलीचिकित्सा अनुप्रयोग, पनडुब्बी सुरक्षा तथा अंतर्राज्यीय हैबीटेशन संबंधी मुद्दों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई।

डी आर डी ओ तथा सेना के संकाय सदस्यों द्वारा व्याख्यान दिए गए। प्रतिभागियों को अंतर्राज्यीय प्रणाली विकास के लिए डेबेल में स्थापित परीक्षण तथा ढांचागत सुविधाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई।



संकाय सदस्यों के साथ प्रतिभागीगण।

श्री जी एस एन मूर्ति, वैज्ञानिक एफ, पाठ्यक्रम निदेशक ने समापन सम्बोधन दिया। श्री अरुण कुमार, वैज्ञानिक डी, पाठ्यक्रम समन्वयक थे।



डी आर डी ओ समाचार

कृषि विकास समीक्षा बैठक

रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार), लेह द्वारा 31 अक्टूबर 2014 को लद्दाख क्षेत्र के लिए कृषि विकास समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। विभिन्न संगठनों, केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर; कृषि एवं बागवानी विभाग, लेह; लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषद (एल ए एच डी सी), लेह; शेर-ए-कश्मीर कृषि तथा प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (एस के यू ए एस टी), जम्मू एवं कश्मीर तथा डिहार के 52 प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया।

लद्दाख क्षेत्र में कृषि के क्षेत्र में हो रही समस्याओं पर चर्चा की गई। डिहार, लद्दाख में कृषि के क्षेत्र में अग्रणी है। 101 प्रकार की सब्जियां उगाने की उपलब्धि प्राप्त कर डिहार ने लद्दाख क्षेत्र में कृषि विकास हेतु अपने अनुभव साझा किए।



बैठक के दौरान प्रस्तुति का दृश्य।

स्टेलथ पर संयुक्त कार्यशाला

दिनांक 09 नवम्बर 2014 को रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर तथा आई आई टी, जोधपुर द्वारा स्टेलथ पर संयुक्त कार्यशाला का आयोजन किया गया। डी एल जे से 21 तथा आई आई टी, जोधपुर से 16 प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। कार्यशाला का उद्देश्य आई आई टी संकाय सदस्यों को वायुवाहित स्टेलथ के विस्तृत क्षेत्र में डी एल जे के वर्तमान कार्य तथा भविष्यत् कार्य योजना तथा डी आर डी ओ – आई आई टी, जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में आई आई टी, जोधपुर में प्रस्तावित उन्नत सामग्री तथा विद्युत चुम्बकीय केन्द्र (सी ए एम ई एल) की स्थापना के बारे में आई आई टी के संकाय सदस्यों को जानकारी देना था।



कार्यशाला के दौरान विचार विमर्श करते प्रतिभागीगण।

कार्यशाला के दौरान निदेशक, डी एल जे तथा निदेशक, आई आई टी, जोधपुर उपस्थित थे।

सिगमा मार्क-II

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर द्वारा वायु सेना तथा अन्य अधिकारियों के लिए दिनांक 10-21 नवम्बर 2014 के दौरान सिगमा मार्क-II पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। 16 अधिकारियों सहित 56 वायु सेना कार्मिकों तथा 40 अन्य रैंक के कार्मिकों ने इसमें भाग लिया।

श्री एन के अग्रवाल, वैज्ञानिक एफ ने डी एल जे की गतिविधियों का एक संक्षिप्त परिचय दिया। श्री आर के खत्री, वैज्ञानिक ई ने सिगमा मार्क-II सॉफ्टवेयर के विकास एवं छद्मावरण पद्धति पर व्याख्यान दिया। डॉ एम सी व्यास, वैज्ञानिक सी, श्री मनीष चौधरी, वैज्ञानिक सी, एवं श्री मधुसूदन, तकनीकी अधिकारी बी ने सिगमा मार्क-II के विभिन्न सॉफ्टवेयर प्रारूपों का प्रदर्शन किया तथा प्रतिभागियों को इसका प्रशिक्षण भी दिया।

नाभिकीय-जैविक-रासायनिक सुरक्षा

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर द्वारा दिनांक 13-17 अक्टूबर 2014 के दौरान नाभिकीय-जैविक-रासायनिक सुरक्षा पर विशेष पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ एस आर वडेरा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, डी एल जे ने इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। पाठ्यक्रम में आई एन एस शिवाजी, लोनावला के भारतीय नौसेना तथा तटरक्षक अधिकारियों ने इसमें भाग लिया।

कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को नाभिकीय सुरक्षा तथा नाभिकीय आपातकाल प्रबंधन अवधारणाओं एवं तकनीकों की जानकारी देना था, जिसमें मूलभूत नाभिकीय भौतिकी तथा नाभिकीय विकिरण



संकाय सदस्य व्याख्यान देते हुए।

इकाइयों पर विभिन्न पहलू, नाभिकीय विकिरण संसूचक तथा निगरानी, नाभिकीय शस्त्रों के प्रभाव एवं उनकी विशेषताएं, विकिरण एवं प्रचालन सीमाओं के जैविकीय प्रभाव, विकिरण आपातकाल में चिकित्सा प्रबंधन, नाभिकीय नुकसान रोकथाम प्रारूप, इंजीनियरिंग विजुलाइजेशन के लिए विकिरण इमेजिंग, आपदा परिदृश्य में विकिरण डोजिमैट्री एवं नाभिकीय

परिदृश्य में प्राथमिक सहायता इत्यादि शामिल हैं। समय, दूरी तथा शिल्डिंग अवधारणा, रेडियोधर्मिता का प्रसार, नाभिकीय घटनाओं की निगरानी प्रणाली, स्लाइड रूल एवं यील्ड कैलकुलेटर, मानव रहित वायुयान का प्रयोग कर विकिरण की हवाई निगरानी, संदूषण निगरानी प्रणाली तथा विसंदूषण प्रक्रियाओं पर अभ्यास भी कराया गया।

श्री जी एल बहेती, वैज्ञानिक जी, पाठ्यक्रम निदेशक तथा श्री डी के त्रिपाठी, वैज्ञानिक एफ, पाठ्यक्रम समन्वयक थे।

प्रयोक्ता संवाद समागम 2014

रक्षा भू-भाग अनुसंधान प्रयोगशाला (डी टी आर एल), दिल्ली द्वारा 11 नवम्बर 2014 को मेटकॉफ हाउस परिसर, दिल्ली में प्रयोक्ता संवाद समागम 2014 का आयोजन किया गया। डॉ एम आर भुटियानी, निदेशक, डी टी आर एल, समारोह के मुख्य अतिथि तथा श्रीमती चंद्रिका कौशिक, निदेशक, सैन्य व्यापार संवाद निदेशालय, डी आर डी ओ, विशिष्ट अतिथि थे। डॉ भुटियानी ने उपयोक्ता संवाद सम्मेलन 2014 आयोजित करने के उद्देश्य पर संक्षिप्त टिप्पणी की तथा डी टी आर एल की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। सैन्य बुद्धिमता निदेशालय (एमआई-16), उड्डयन अनुसंधान केन्द्र (ए आर सी), वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बेंगलूरु; रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर; संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना



उद्घाटन अवसर पर निदेशक महोदय व्याख्यान देते हुए।

(सी वी आर डी ई), चेन्नई; पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली; तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे एन यू) के प्रतिनिधियों सहित लगभग 54 उपयोक्ताओं ने इस सम्मेलन में भाग लिया। डॉ सुजाता दास, समन्वयक, उपयोक्ता संवाद सम्मेलन 2014 ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

युवा वैज्ञानिकों के लिए सम्मेलन

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बेंगलूरु द्वारा 16 नवम्बर 2014 को 23वें युवा वैज्ञानिकों के लिए सम्मेलन 2014 का आयोजन किया गया। श्री संजय बर्मन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बेंगलूरु ने आमंत्रित व्याख्यान दिया। मिशन संवेदी परियोजना के विभिन्न आयामों पर की ध्यान आकर्षित करते हुए आपने विशेष रूप से सावधानीपूर्वक परियोजना आवश्यकताओं का विश्लेषण एवं उच्च निर्भरता वाली प्रणालियां बनाने पर बल दिया। युवा वैज्ञानिकों को अपने संदेश में आपने कहा कि संगठनात्मक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए टीम सदस्यों के व्यक्तिगत कौशल की पहचान करने के लिए हमें उनके द्वारा विगत में किए कार्यों के मद्देनजर भविष्य की अपेक्षाएं रखनी चाहिए। बाद में, श्री विग्नेश कानन एम, वैज्ञानिक सी ने गैस टरबाइन इंजन की द्रवगतिकी नियंत्रण एवं ईंधन नियंत्रण प्रणाली पर प्रस्तुति दी।



श्री संजय बर्मन आमंत्रित व्याख्यान देते हुए।

वांतरिक्ष गुणवत्ता तथा विश्वसनीयता

वांतरिक्ष गुणवत्ता तथा विश्वसनीयता समिति (एस ए क्यू आर) तथा गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बैंगलूरु द्वारा दिनांक 10 नवम्बर 2014 को वांतरिक्ष गुणवत्ता तथा विश्वसनीयता पर संयुक्त कार्यशाला का आयोजन किया गया। विभिन्न अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशालाओं, उद्योग तथा अकादमियों से 161 प्रतिभागियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। डॉ सी पी रामनारायणन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, जी टी आर ई, तथा अध्यक्ष, एस ए क्यू आर ने समापन समारोह की अध्यक्षता की। श्री पी एस सुब्रमण्यम, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, वैमानिकी विकास एजेंसी (ए डी ए), बैंगलूरु उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे। अपने संबोधन में श्री सुब्रमण्यम ने कहा कि बढ़ते हुए प्रतिस्पर्धात्मक उद्योग में सफलता पाने के लिए मुख्य रूप से गुणवत्ता उत्पाद तथा सेवाएं प्रदान करने की क्षमता होनी चाहिए। हमें वैश्विक स्तर के निर्माता बनने के लिए भारतीय सैन्य वैमानिकी से संबंधित परियोजनाओं को उच्चतम गुणवत्ता तथा आश्वासन मानकों पर ले जाना होगा।

डॉ के तमिलमणि, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक (ऐरो), डी आर डी ओ ने मुख्य संबोधन दिया तथा कहा कि गुणवत्ता, विश्वसनीयता एवं सुरक्षा वैमानिकी उद्योग के महत्वपूर्ण भाग हैं। आपने विशेष रूप से गुणवत्ता तथा विश्वसनीयता प्रबंधन के क्षेत्र में प्रशिक्षित विशेषज्ञों की आवश्यकता पर बल दिया।



पाठ्यक्रम सी डी के विमोचन का दृश्य।

सुरक्षा, गोपनीयता एवं अनप्रयुक्त क्रिप्टोग्राफी अभियांत्रिकी

रक्षा उन्नत प्रौद्योगिकी संस्थान (डी आई ए टी), मानद विश्वविद्यालय, पुणे द्वारा दिनांक 18-22 अक्टूबर 2014 के दौरान सुरक्षा, गोपनीयता एवं अनप्रयुक्त क्रिप्टोग्राफी अभियांत्रिकी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का उद्देश्य साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे विशेषज्ञों एवं अनुसंधानकर्ताओं को एकसाथ एक मंच पर लाना था। प्रोफेसर एडरियन पेरिग, ऐथ, ज्यूरिच; प्रोफेसर आनंद रघुनाथन, पुरडू विश्वविद्यालय; प्रोफेसर पीटर स्वाबे, रैंडबाउंड विश्वविद्यालय; प्रोफेसर वासेक, मसारिक विश्वविद्यालय; प्रोफेसर गाबी सिबोनी, तेल अवीव विश्वविद्यालय एवं डॉ फियोंग हा ग्यूएन, आई आई टी, खड़गपुर आदि प्रतिष्ठित विशिष्ट वैज्ञानिक तथा प्रोफेसर थे जिन्होंने मुख्य संबोधन तथा व्याख्यान दिए। इस सम्मेलन से डी आई ए टी, पुणे को विशेष रूप से साइबर सुरक्षा पर चल रहे एम टेक कार्यक्रम में लाभ होगा तथा डी आई ए टी, पुणे डी आर डी ओ एवं आई आई टी के मध्य नई परियोजनाएं स्थापित की जाएंगी। सम्मेलन के दौरान 18 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

इस सम्मेलन के सह प्रायोजक थे, डी आर डी ओ, बी ई एल, इसरो, डी एस टी, एन टी आर ओ, एवं सी एस आई आर। डॉ सी आर एस कुमार, एवं डॉ अरुण मिश्रा, कम्प्यूटर अभियांत्रिकी विभाग, डी आई ए टी, पुणे तथा उनकी टीम ने इस सम्मेलन का आयोजन किया।

मानव संसाधन समन्वयक बैठक

नाभिकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली द्वारा 27 नवम्बर 2014 को दिल्ली स्थित डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं की मानव संसाधन समन्वयक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में कनिष्ठ अनुसंधान अध्येयताओं की भर्ती, प्रशिक्षुओं की नियुक्ति, मार्गनिर्देश, सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम, विशेष प्रशिक्षण, लक्षित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम एवं अन्य साधारण मुद्दे तथा समस्याओं पर विचार किया गया। बैठक में विचारों का आदान-प्रदान हुआ तथा विभिन्न समस्याओं के हल पाकर सभी ने एक-दूसरे से कुछ न कुछ सीखा। प्रतिभागियों ने दिनांक 02-04 फरवरी 2015 के दौरान इनमास द्वारा भगवंतम सभागार, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली में आयोजित किए जाने वाले डी आर डी ओ युवा वैज्ञानिक सम्मेलन के लिए भी जानकारी मांगी। यह निर्णय लिया गया



बैठक के दौरान चर्चा का दृश्य।

कि यह चर्चा अगली बैठक में भी जारी रहेगा जो अग्नि, पर्यावरण एवं विस्फोटक सुरक्षा केंद्र (सीफीस), दिल्ली द्वारा आयोजित की जाएगी। डॉ राजीव विज, वैज्ञानिक एफ, इनमास ने इस बैठक का समन्वय किया।

प्रशिक्षण एवं जागरूकता

नाभिकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली द्वारा 20 नवम्बर 2014 को ई-संसाधन की प्रभावी पहुंच तथा साहित्य नकल कैसे रोकें पर प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस जागरूकता कार्यक्रम में 80 से अधिक अधिकारियों, अनुसंधानकर्ताओं, पी एच डी तथा इनमास के तकनीकी स्टॉफ ने भाग लिया। दो प्रकाशकों के प्रतिनिधियों ने उपयोक्ताओं को टर्न-इट-इन तथा आई-थेनटीकेट सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण दिया। डॉ राजीव विज, वैज्ञानिक एफ, इनमास ने इस पाठ्यक्रम का समन्वय किया।

परियोजना प्रबंधन

प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आई टी एम), मसूरी द्वारा 08-10 अक्टूबर 2014 के दौरान डेवलेपमेंट एन्कलेव, नई दिल्ली में लेजर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी केंद्र (लेसटेक), दिल्ली; टोसावस्था भौतिक प्रयोगशाला (एस एस पी एल), दिल्ली; अग्नि, पर्यावरण एवं विस्फोटक सुरक्षा केंद्र (सीफीस), दिल्ली के वरिष्ठ वैज्ञानिकों के लिए परियोजना प्रबंधन पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य वैज्ञानिकों को उन्नत परियोजना प्रबंधन तकनीकों के बारे में जानकारी देना था, जैसे कि परियोजना नियोजन समीक्षात्मक क्रम कार्यप्रणाली सिद्धांत ताकि कठिन परियोजनाओं को सुचारू रूप से चलाया जा सके। परियोजना जोखिम प्रबंधन, कठिन कड़ी मार्ग सिद्धांत, स्थिर सिद्धांत इत्यादि पर चर्चा की गई।

डॉ जी मालकोंडेया, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (मानव संसाधन), डॉ (सुश्री) चित्रा राजगोपालन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, अग्नि, पर्यावरण एवं विस्फोटक सुरक्षा केंद्र (सीफीस), दिल्ली तथा श्री एच बी श्रीवास्तव, निदेशक, लेजर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी केंद्र (लेसटेक), दिल्ली के द्वारा पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया गया। 22 वैज्ञानिकों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया।



संकाय सदस्यों के साथ प्रतिभागीगण।

रक्षा प्रणालियों हेतु सूक्ष्मतरंग नलिका

सूक्ष्मतरंग नलिका अनुसंधान तथा विकास केंद्र (एम टी आर डी सी), बैंगलूरु द्वारा 27-30 अक्टूबर 2014 के दौरान तीनों सेनाओं के अधिकारियों तथा प्रणाली उपयोक्ताओं के लाभ के लिए रक्षा प्रणालियों हेतु सूक्ष्मतरंग पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न प्रकार के सूक्ष्मतरंगों के सिद्धांतों को प्रचालन के लिए सैन्य बलों के कार्मिकों के ज्ञान को अद्यतन करना था। पाठ्यक्रम में शामिल विषय थे, सूक्ष्मतरंग अभियांत्रिकी एवं सूक्ष्म तरंग स्रोत की समालोचना, लाइनियर बीम एवं क्रोस फील्ड डिवाइस के प्रौद्योगिकीय पहलू, हाई वोल्टेज पावर सप्लाय, सूक्ष्मतरंग मापन के मूलभूत सिद्धांत। डॉ ललित कुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, सूक्ष्मतरंग नलिका अनुसंधान तथा विकास केंद्र (एम टी आर डी सी), बैंगलूरु ने पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया तथा सूक्ष्मतरंग एवं टेरातरंग का एक अद्भुत संसार पर उद्घाटन व्याख्यान दिया।

पाठ्यक्रम के समापन सत्र में डॉ के डी नायक, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक (एम ई डी, सी ओ एस); डॉ ललित कुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, एम टी आर डी सी, बैंगलूरु तथा डॉ के एस भट्ट, सह निदेशक, एम टी आर डी सी, बैंगलूरु ने सत्रों की अध्यक्षता की। पाठ्यक्रम में विभिन्न सेनाओं के लिए सूक्ष्मतरंग नलिकाओं की आवश्यकता तथा संबंधित उप प्रणालियों, सूक्ष्मतरंग नलिकाओं एवं जीवन से संबंधित समस्याएं, तथा सूक्ष्मतरंग नलिकाओं की विश्वसनीयता पर चर्चा की गई।

थल सेना, वायु सेना, नौसेना, बी ई एल तथा डी आर डी ओ की सहायक प्रयोगशालाओं से 44 प्रतिभागियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया। डॉ लता क्रिस्टी, वैज्ञानिक जी, पाठ्यक्रम निदेशक, तथा श्री वी नल्लासामी, वैज्ञानिक एफ, पाठ्यक्रम समन्वयक थे।

अंतर्राज्यीय ट्रांसड्यूसरों में अद्यतन उन्नयन

नौसेना भौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि द्वारा 13-17 अक्टूबर 2014 के दौरान अंतर्राज्यीय ट्रांसड्यूसरों में अद्यतन उन्नयन पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य अंतर्राज्यीय ट्रांसड्यूसरों के क्षेत्र में उभरती हुई नई अवधारणाओं, तकनीकों, तथा प्रौद्योगिकियों की जानकारी देना था। डी आर डी ओ की प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं से 32 प्रतिभागियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया।



डी आर डी ओ समाचार

पाठ्यक्रम में शामिल विषयों ने अंतर्जालीय ट्रांसड्यूसरों में बहुआयामी उन्नयन पर प्रकाश डाला, जिसमें सोनार एवं ट्रांसड्यूसर अभिकल्पन, ध्वनिक मापन, टारगेट स्ट्रेंथ मेजरमेंट्स हाइड्रोफॉस-एक्सीलरेशन सेंसिटीविटी,



संकाय सदस्य अपने विचार व्यक्त करते हुए।

वैज्ञानिक संकाय सदस्य थे। डॉ आर रमेश, वैज्ञानिक एफ, पाठ्यक्रम समन्वयक थे।

उभरती हुई प्रबंधन उपकरण तकनीक

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर द्वारा 17-19 नवम्बर 2014 के दौरान उभरती हुई प्रबंधन उपकरण तकनीकों पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य अंतर्जालीय ट्रांसड्यूसरों के क्षेत्र में उभरती हुई नई अवधारणाओं, तकनीकों, तथा प्रौद्योगिकियों की जानकारी देना था। डी आर डी ओ की प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं से 25 प्रतिभागियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया।

पाठ्यक्रम के दौरान शामिल विषय थे सक्षमता जांच, प्रशिक्षण निवेश के लाभ, स्थिति जागरूकता, टीम विकास मॉडल, ज्ञान प्रबंधन, कठिन स्थितियों का प्रबंधन इत्यादि। श्री एस सी नारंग, भूतपूर्व अध्यक्ष, कार्मिक प्रतिभा प्रबंधन केन्द्र (सेपटेम), दिल्ली ने संगठन विकास से संबंधित अपने अनुभव साझा किए। श्री आर अप्पावुराज, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर ने समापन समारोह में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किये।



श्री एस सी नारंग (मध्य) व्याख्यान देते हुए।

हिन्दी कार्यशाला

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर द्वारा 24–28 नवम्बर 2014 के दौरान तकनीशियनों के लिए 59वीं हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ ए के सन्निग्रही, अपर निदेशक (प्रशासन), ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन सम्बोधन में डॉ सन्निग्रही ने हिन्दी की उत्पत्ति तथा उसके विकास एवं उसके प्रयोग के लाभ पर संक्षिप्त जानकारी दी। 20 कार्मिकों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। श्री एस के रे, हिन्दी अधिकारी एवं कुमारी पूजा सिंह, हिन्दी सहायक द्वारा हिन्दी की कार्य प्रणाली पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। डॉ सन्निग्रही ने सफल प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र सहित पुरस्कार प्रदान किए।

हिन्दी कार्यशाला

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद द्वारा 03 दिसम्बर 2014 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री के राम शर्मा, वैज्ञानिक जी एवं उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। श्री एन वेंकटेश, वैज्ञानिक एफ एवं सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने हिन्दी अनुभाग की विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश डाला। श्री काजिम अहमद, वरिष्ठ हिन्दी सहायक, अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद ने हिन्दी व्याकरण तथा प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए हिन्दी कार्यान्वयन में उसकी व्यापकता पर एक व्याख्यान दिया। श्री मदन लाल कसौतिया, वैज्ञानिक सी, अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद ने सोशल मीडिया एवं हिन्दी के प्रचार प्रसार में इसकी भूमिका पर एक व्याख्यान दिया। श्री पंकज राव, हिन्दी सहायक ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

नेटवर्क सुरक्षा

वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली द्वारा 24–28 नवम्बर 2014 के दौरान मेटकॉफ हाउस, दिल्ली में नेटवर्क सुरक्षा पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ जी अतिथन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली ने इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन उद्बोधन में डॉ जी अतिथन ने साइबर हमलों से सुरक्षा उपलब्ध कराने के लिए नेटवर्क में बेसिक प्रोटोकॉल के अध्ययन पर बल दिया।

पाठ्यक्रम के दौरान प्रोटोकॉल्स फॉर वायर्ड, बेतार एवं तदर्थ नेटवर्क, नेटवर्कों में भेद्यता, नेटवर्क सुरक्षा प्रौद्योगिकियां, क्रिप्टोग्राफी, नेटवर्क सुरक्षा मानक इत्यादि विषय शामिल थे। एस ए जी के अलावा इन्द्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई आई टी) दिल्ली, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकत्ता, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र (एन आई सी), तथा उद्योग के वरिष्ठ संकाय सदस्यों ने इस पाठ्यक्रम में व्याख्यान दिए। पाठ्यक्रम में विभिन्न डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं, जे सी बी, तथा शस्त्र एवं इलैक्ट्रॉनिक्स प्रणाली अभियांत्रिकी स्थापना के प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों ने नेटवर्क सुरक्षा, निगरानी, तथा मूल्यांकन पर न केवल सैद्धांतिक रूप से बल्कि अभ्यास भी किया।



संकाय सदस्यों के साथ प्रतिभागीगण।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार), लेह

रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार), लेह द्वारा 27 अक्टूबर 2014 से 01 नवम्बर 2014 के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार), लेह के कार्मिकों को एक शपथ दिलायी गई। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के आयोजन के रूप में बहुत सी गतिविधियों का आयोजन किया गया, जैसे निबंध प्रतियोगिता, पोस्टर बनाना, सतर्कता के महत्व पर कविता या स्लोगन, तथा भ्रष्टाचार को रोकने में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग इत्यादि। सतर्कता के महत्व तथा भ्रष्टाचार को रोकने के तरीकों पर डॉ आर बी श्रीवास्तव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार), लेह ने एक व्याख्यान दिया। विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को डॉ श्रीवास्तव ने प्रमाण पत्र से सम्मानित किया।



सतर्कता जागरूकता शपथ का दृश्य।

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बैंगलूरु



श्रीमती इंद्रजीत कुमार व्याख्यान देते हुए।

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बैंगलूरु द्वारा 27 अक्टूबर 2014 से सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर जी टी आर ई, बैंगलूरु के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शपथ दिलाई गई। भ्रष्टाचार को रोकने में प्रौद्योगिकी विधि विषय पर 30 अक्टूबर 2014 को श्रीमती के इन्द्रजीत कुमार, आई डी ए एस, आई एफ ए (अनुसंधान तथा विकास) ने व्याख्यान दिया। श्रोताओं को सजग रहने की आवश्यकता पर बल देते हुए आपने बताया कि भ्रष्टाचार को रोकने हेतु अधिग्रहण गतिविधियों के लिए ई-प्रसंस्करण की आवश्यकता है।

कौमी एकता सप्ताह

देशभक्ति, साम्प्रदायिक सद्भाव, तथा राष्ट्रीय एकता की भावना पैदा करने के लिए प्रतिवर्ष 19-25 नवम्बर के दौरान कौमी एकता सप्ताह मनाया जाता है।

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर द्वारा 19-25 नवम्बर 2014 के दौरान कौमी एकता सप्ताह मनाया। श्री जी एल बहेती, कार्यकारी निदेशक, डी एल, जोधपुर ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई। सप्ताह के दौरान विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों के लिए चित्रकारी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डी एल जे के कार्मिकों के 36 बच्चों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

समापन समारोह में डी एल जे सभागार में एक मैजिक शो का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डी एल, जोधपुर के कार्मिकों के परिवार के सदस्यों ने पूर्ण उत्साह के साथ भाग लिया। मुख्य अतिथि, श्रीमती किरन वडेरा, डी एल, जोधपुर की प्रथम महिला ने बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए। डॉ एस आर वडेरा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, डी एल, जोधपुर ने प्रयोगशाला के कार्मिकों के 10वीं तथा 12वीं कक्षा के मेधावी छात्र/छात्राओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र प्रदान किए।



चित्रकारी प्रतियोगिता का दृश्य।

शिकायत केन्द्र प्रारम्भ किया

सम्पदा प्रबंधन इकाई (ई एम यू) ने डी आर डी ओ के तिमारपुर परिसर के निवासियों की दैनिक शिकायतों का प्रबंध, नियंत्रण एवं निराकरण करने के लिए तिमारपुर, दिल्ली में एक शिकायत केन्द्र स्थापित किया है।

श्री अजय सिंह, मुख्य कार्यकारी (सी डब्ल्यू एवं ई) ने 12 नवम्बर 2014 को इस इकाई का उद्घाटन किया। इस आधुनिक शिकायत इकाई में निवासियों के लिए एक सुव्यवस्थित कमरा, जे सी ओ कार्यालय तथा बायोमैट्रिक उपस्थिति प्रणाली सहित कम्प्यूटर कक्ष, अलग से स्टॉफ कक्ष एवं भण्डार कक्ष, दूरभाष तथा इंटरनेट पर शिकायत पंजीकृत करने के लिए वेब आधारित शिकायत पंजीकरण सॉफ्टवेयर है। शिकायतों के पंजीकरण की सूचना निवासियों को, साथ ही अभियंता स्थल पर तुरंत ध्यान देने के लिए एस एम एस तथा ई-मेल द्वारा सुनिश्चित की जाती है। यह इकाई 24X7 काम करती है।

प्रोन्नति

उत्कृष्ट वैज्ञानिक, उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे



डॉ मनोज गुप्ता, वैज्ञानिक जी, उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे को उत्कृष्ट वैज्ञानिक प्रोन्नत किया गया है।

डॉ मनोज गुप्ता, 1985 में कार्बनिक रसायन में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के बाद एच ई एम आर एल, पुणे में शामिल हुए। आपने पुणे विश्वविद्यालय से पी एच डी की उपाधि प्राप्त की। तब से आप मिश्रित रॉकेट प्रणोदन के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। आपको विभिन्न रॉकेट एवं प्रक्षेपास्त्रों, जैसे 122 एम एम ई आर आर, पिनाका, त्रिशूल, आकाश, नाग, एल आर एस ए एम, पिनाका मार्क-II निर्भय, इत्यादि के लिए मिश्रित प्रणोदन का विकास करने में लगभग 30 वर्षों का अनुभव है। 1990-1992 के दौरान आयुध फैक्टरी, इटारसी में मिश्रित प्रणोदन के लिए एकमात्र उत्पादन सुविधा के स्थापना में सक्रिय रहे। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में आपके बहुत से आलेख प्रकाशित हुए हैं। आपके नाम 15 पेटेंट हैं।

डॉ गुप्ता को आत्मनिर्भरता में उत्कृष्टता हेतु डी आर डी ओ अग्नि पुरस्कार, 2011; डी आर डी ओ वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार, 2010; तथा पाथब्रेकिंग अनुसंधान/उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी विकास के लिए डी आर डी ओ पुरस्कार, 2008 प्राप्त है।

निदेशक, इलैक्ट्रॉनिक्स तथा रडार विकास स्थापना (एल आर डी ई), बेंगलूरु



श्री एस एस नागराज, उत्कृष्ट वैज्ञानिक ने 01 दिसम्बर 2014 से इलैक्ट्रॉनिक्स तथा रडार विकास स्थापना (एल आर डी ई), बेंगलूरु के निदेशक का कार्यभार संभाल लिया है। श्री एस एस नागराज ने राजकीय बी डी टी अभियांत्रिकी महाविद्यालय, दावनगेरा से 1982 में इलैक्ट्रॉनिक्स एवं संचार में अभियांत्रिकी की उपाधि तथा 1986 में के आर ई सी, सूरतकल से इलैक्ट्रॉनिक्स में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। आप 1987 में एल आर डी ई में सम्मिलित हुए।

आप रडार प्रणालियों के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं तथा आप आधुनिकतम रडार एवं उससे संबंधित प्रौद्योगिकियों के विशेषज्ञ हैं। आपकी विशेषज्ञता के क्षेत्र हैं, पैसिव फेसड एर्रे रडार, एक्टिव फेसड एर्रे रडार, रडार सिग्नल प्रोसेसिंग एवं इमेजिंग रडार। आपने प्रौद्योगिकीय उन्नयन रडार प्रणालियों तथा शस्त्र प्रणालियों के साथ उनके एकीकरण के अभिकल्पन एवं विकास में सफलतापूर्वक योगदान किया है, जो वैमानिकी हमलों की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं।

श्री एस एस नागराज ने भारतीय उद्योग, शिक्षा जगत, एवं विदेशी फर्मों के साथ कार्य किया है, भविष्य की आवश्यकताओं के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकियों की स्थापना में सहायता की है। निदेशक, एल आर डी ई के रूप में, आपने सेनाओं तथा अर्ध सैनिक बलों के लिए बाहरी एवं आंतरिक हमलों के बचाव के लिए लघु दूरी, मध्यम दूरी, एवं लम्बी दूरी के लक्ष्यों की खोज एवं पहचान के लिए रडार प्रणालियों का विकास करके उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति में संलग्न रहेंगे।

आपको डी आर डी ओ प्रौद्योगिकी समूह पुरस्कार, 2002; पाथब्रेकिंग अनुसंधान/उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी विकास के लिए डी आर डी ओ पुरस्कार, 2006; डी आर डी ओ वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार, 2008 प्राप्त हैं।

पुरस्कार

आई ई टी ई-राम लाल वधवा पुरस्कार

डॉ ललित कुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, निदेशक, सूक्ष्मतरंग नलिका अनुसंधान तथा विकास केंद्र (एम टी आर डी सी), बेंगलूरु को आई ई टी ई, नई दिल्ली में 27-28 सितम्बर 2014 के दौरान बौद्धिक क्षमता विकास-भारतीय परिदृश्य पर आयोजित 57वें आई ई टी ई वार्षिक तकनीकी सम्मेलन में स्वदेशी अभिकल्पन, आधुनिकतम उच्च शक्ति सूक्ष्मतरंग स्रोतों का उत्पादन एवं विकास, रक्षा अनुप्रयोगों के लिए माइक्रोवेव पावर मॉड्यूल्स एंड ट्रांसमीटर्स में दिए गए विशिष्ट योगदान एवं नेतृत्व के लिए आई ई टी ई-राम लाल वधवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।



उच्च अर्हता प्राप्ति

सैन्य उद्वेग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र (सेमीलेक), बेंगलूरु

श्री शिरीष एस काले, क्षेत्रीय निदेशक, आर सी एम ए (एफ एवं एफ-एफ ओ एल) को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी) बम्बई, मुम्बई द्वारा एनवायरमेंटली एसिसटिड क्रेकिंग बिहेवियर ऑफ एल्कलेड Al-Zn-Mg-Cu-Cr अलॉय एडीसिवली बांडिड विद कार्बन फाइबर रेनफोर्सड प्लास्टिक लेमीनेट नामक विषय पर उनके शोध प्रबंध पर पी एच डी की उपाधि से सम्मानित किया गया है।

पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली

श्री प्रमोद कुमार साहू, वैज्ञानिक डी, पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी), दिल्ली द्वारा एक्सट्रेक्टिव टैक्सट समराइजेशन यूजिंग रेंडम इंडेक्सिंग नामक विषय पर उनके शोध प्रबंध पर पी एच डी की उपाधि से सम्मानित किया गया है।



वैज्ञानिक आलेख प्रस्तुति

उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद

श्रीमती पम्मी रत्न, वैज्ञानिक डी, उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद ने 04-07 नवम्बर 2014 के दौरान सेंडई, जापान में आयोजित प्रतिष्ठित एशिया पैसिफिक सूक्ष्मतरंग सम्मेलन 2014 में मिटिगेशन टेक्नीक फॉर हाई एल्टीट्यूड इलैक्ट्रोमैग्नेटिक पल्स फॉर जी पी एस रिसीवर नामक विषय पर वैज्ञानिक आलेख प्रस्तुत किया। श्री सचिन जैन, वैज्ञानिक डी, ए एस एल, हैदराबाद, इस आलेख में दूसरे लेखक हैं। यह आलेख इलैक्ट्रॉनिक सर्किट प्रोटेक्शन के लिए ई एम पी मिटिगेशन प्रौद्योगिकी पर आधारित है।



श्रीमती पम्मी रत्न ने अभियांत्रिकी में महिलाओं पर आयोजित सम्मेलन के विशेष सत्र में भी भाग लिया। आपने विभिन्न देशों में विज्ञान तथा अभियांत्रिकी के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान तथा भारतीय महिला वैज्ञानिकों की भूमिका पर चर्चा की।

ब्रिगेडियर एस के मजुमदार स्मृति युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2014

स्वर्गीय ब्रिगेडियर एस के मजुमदार, भूतपूर्व निदेशक, नाभिकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली, भारत में नाभिकीय चिकित्सा के पिता माने जाते हैं। उनकी याद में उनके सहयोगियों एवं मित्रों ने दिसम्बर 1984 में ब्रिगेडियर एस के मजुमदार स्मृति न्यास की स्थापना की। यह न्यास उत्कृष्ट वैज्ञानिकों से वैज्ञानिक चर्चाओं के अवसर पैदा करने में सक्रिय है। न्यास ने डी आर डी ओ की जीव विज्ञान प्रयोगशालाओं, गैर डी आर डी ओ संस्थानों तथा चिकित्सा



उद्घाटन सत्र का दृश्य।

इकाइयों के वैज्ञानिकों द्वारा जीव विज्ञान के क्षेत्र में सर्वोत्तम शोध आलेख के लिए युवा वैज्ञानिक पुरस्कार (40 वर्ष की आयु से कम) स्थापित किया। पुरस्कार में एक शील्ड तथा एक प्रमाण पत्र शामिल है।

ब्रिगेडियर एस के मजुमदार स्मृति युवा वैज्ञानिक पुरस्कार प्रतियोगिता 17 नवम्बर 2014 को इनमास में आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में ए एफ एम सी, पुणे; रक्षा जैव अभियांत्रिकी तथा चिकित्सा-इलैक्ट्रो प्रयोगशाला (डेबेल), बेंगलूरु; नाभिकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली; कमांड अस्पताल (वायु सेना), बेंगलूरु; सैन्य अस्पताल (आर एवं आर), दिल्ली छावनी तथा वैमानिकी चिकित्सा संस्थान, भारतीय वायु सेना, बेंगलूरु के युवा वैज्ञानिकों/अनुसंधानकर्ताओं ने भाग लिया।

डॉ जयंत डेनियल, वैज्ञानिक डी, रक्षा जैव अभियांत्रिकी तथा चिकित्सा-इलैक्ट्रो प्रयोगशाला (डेबेल), बेंगलूरु को SpO_2 आधारित वीअरेबल ऑक्सीजन कंट्रोलर सिस्टम के अभिकल्पन तथा विकास में दिए गए योगदान के लिए प्रतिष्ठित मूल्यांकनकर्ताओं, प्रोफेसर एच कृष्णा प्रसाद, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान चिकित्सा संस्थान, नई दिल्ली; कर्नल एच एस शर्मा, कमांडिंग ऑफिसर, सैन्य दंत केन्द्र, बेस अस्पताल, दिल्ली; डॉ तरुण सेकरी, वैज्ञानिक जी, प्रमुख, एंडोक्रिनोलॉजी एवं थाइरॉयड अनुसंधान, इनमास, एवं डॉ एम प्रसन्ना रेड्डी, वैज्ञानिक एफ, रक्षा शरीरक्रिया एवं सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास), दिल्ली द्वारा वर्ष 2014 के लिए सर्वोत्तम युवा वैज्ञानिक चुना गया। डॉ राजीव विज, वैज्ञानिक एफ, संयुक्त सचिव, ब्रिगेडियर एस के मजुमदार स्मृति न्यास, ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

रक्त दान शिविर

रक्षा इलैक्ट्रोनिक्स प्रयोज्यता प्रयोगशाला (डील), देहरादून ने 27 नवम्बर 2014 को आई एम ए रक्त बैंक, देहरादून के तत्वावधान में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया। श्री आर सी अग्रवाल, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, एवं निदेशक, रक्षा इलैक्ट्रोनिक्स प्रयोज्यता प्रयोगशाला (डील), देहरादून ने इस शिविर का उद्घाटन किया। डॉ पी के पाण्डेय, डॉ जे सी अरोड़ा एवं श्री मोहित चावला ने इसका आयोजन किया। डील के कर्मियों ने बड़े ही जोश एवं उत्साह के साथ इस शिविर में भाग लिया। डील के कर्मियों ने कुल मिलाकर 41 यूनिट रक्त दान किया गया।

खेलकूद गतिविधियां

डी आर डी ओ दक्षिण क्षेत्र थ्रो बॉल प्रतियोगिता



विजेता खिलाड़ी ट्रॉफी के साथ।

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बेंगलूरु द्वारा 27-28 नवम्बर 2014 के दौरान दक्षिण क्षेत्र डी आर डी ओ थ्रो बॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। श्री एम वी राव, वैज्ञानिक जी, सह निदेशक, केयर, ने इसका उद्घाटन किया। डी आर डी ओ की दक्षिण क्षेत्र की प्रयोगशालाओं से पांच टीमों ने इसमें भाग लिया। केयर की टीम विजेता जबकि वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बेंगलूरु की टीम उपविजेता रही। श्री एम वी राव ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

डी आर डी ओ उत्तर क्षेत्र बैडमिंटन प्रतियोगिता

रक्षा अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी आर डी ई), ग्वालियर द्वारा 29-31 अक्टूबर 2014 के दौरान डी आर डी ओ उत्तर क्षेत्र बैडमिंटन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर ने एकल एवं युगल प्रतियोगिताएं जीतीं। 12 टीमों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। श्री अश्विनी शर्मा ने एकल खिताब जबकि लेफ्टिनेंट कर्नल जोजी पॉल एवं श्री नर सिंह यादव ने युगल खिताब जीता। प्रतियोगिता के दौरान उत्कृष्ट खेल दिखाने के लिए श्री अश्विनी शर्मा को प्रतियोगिता का सर्वोत्तम खिलाड़ी घोषित किया गया। श्री अश्विनी शर्मा, श्री विश्वजीत एवं श्री नर सिंह यादव को राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए डी आर डी ओ उत्तर क्षेत्र बैडमिंटन टीम का प्रतिनिधि चुना गया।



डी एल, जोधपुर की टीम ट्रॉफी के साथ।

डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं / स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बेंगलूरु

08 नवम्बर 2014 : एयर मार्शल पी पी रेड्डी, विशिष्ट मेडल, एकीकृत रक्षा स्टाफ प्रमुख (सी आई एस सी), ने कोलार एयर फील्ड का दौरा किया। विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, ए डी ई, श्री पी श्रीकुमार ने इस अवसर पर माननीय अतिथि को स्थापना द्वारा विकसित विभिन्न प्रकार के यू ए वी के विषय में संक्षेप में बताया। एयर मार्शल पी पी रेड्डी ने रूस्तम-I की उड़ानों तथा पंछी एवं रूस्तम-II के टैक्सी ट्रायलों का अवलोकन किया।



ग्राउंड कंट्रोल स्टेशन में एयर मार्शल पी पी रेड्डी।

आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे

29 अक्टूबर 2014 : लेफ्टिनेंट जनरल एस एच कुलकर्णी, परम विशिष्ट सेवा मेडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल तथा विशिष्ट सेवा मेडल एवं डी जी एम एफ। डॉ के एम राजन, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, ए आर डी ई, पुणे ने माननीय अतिथि के समक्ष मैकेनाइज्ड बलों से संबंधित प्रयोगशाला की विभिन्न परियोजनाओं के विषय में प्रस्तुतियों के माध्यम से जानकारी दी।



लेफ्टिनेंट जनरल कुलकर्णी (बाएं) के साथ स्थापना की विभिन्न परियोजनाओं पर चर्चा करते हुए स्थापना के निदेशक, डॉ के एम राजन।

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर

27 नवम्बर 2014 : कमांडेंट लेफ्टिनेंट जनरल आर एम मित्तल, सी एम ई, पुणे,। इस अवसर पर डॉ एस आर वडेरा, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डी एल, जोधपुर ने माननीय अतिथि को प्रयोगशाला की विशेषज्ञता, मूलभूत तकनीकी ढांचागत सुविधाओं, तकनीकी गतिविधियों एवं उपलब्धियों के विषय में संक्षेप में बताया। लेफ्टिनेंट जनरल मित्तल ने प्रयोगशाला की विभिन्न तकनीकी सुविधाओं को भी देखा। अतिथि ने प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों द्वारा मरुस्थलीय परिवेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा विशेष रूप से छद्मावरण के क्षेत्र में किए जा रहे विभिन्न तकनीकी गतिविधियों में विशेष रूप से रुचि ली।



लेफ्टिनेंट जनरल मित्तल, प्रयोगशाला की गतिविधियों में गहरी रुचि लेते हुए।

पाठकों की राय

आपकी राय हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमें इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी तथा सूचनाप्रद बनाने तथा संगठन को बेहतर रूप में अपनी सेवा उपलब्ध कराने के अवसर प्राप्त होते हैं। डी आर डी ओ समाचार अपने सम्मानित पाठकों से प्रकाशित सामग्रियों तथा विषयों की गुणवत्ता के बारे में अपने सुझाव प्रेषित करने का अनुरोध करता है। कृपया अपने सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें:

संपादक, डी आर डी ओ समाचार, रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक),
मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054 ई-मेल : director@desidoc.drdo.in

आभार

डी आर डी ओ समाचार का सम्पादक मंडल वर्ष भर नियमित रूप से प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं से संबंधित समाचार भेजने के लिए सभी संवाददाताओं, राजभाषा अधिकारियों, तथा प्रबुद्ध निदेशकगणों का आभार व्यक्त करता है।